“विनय मिश्र की ग़जलों में परम्परा-बोध एवं प्रगतिशील चेतना के स्वर: समकालीन हिंदी गजल के सन्दर्भ में”

राँची विश्वविद्यालय, राँची के हिंदी विभाग में पीएच.डी.उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध-प्रारूप

शोध निर्देशिका

डॉमीरा कुमारी
सहायकप्राध्यापक
के.बी.सी.बेडो, महाविद्यालय,
राँची विश्वविद्यालय, रांची.

शोधार्थी

मीना साहू
शोधार्थी
हिंदी विभाग
रांची विश्वविद्यालय,रांची.

<u>सहमति आवेदन</u>

सेवा में;

डॉ मीरा कुमारी
सहायक प्राध्यापिका
हिंदी विभाग
के0 सी0 बी0 महाविद्यालय बेडो।

विषय: **सहमति प्रदान हेतु।**

महाशय:-

निवेदन पूर्वक कहना है कि मैं **मीना साहू** आपके निर्देशन में शोध विषय:**"विनय मिश्र की ग़ज़लों में परम्परा-बोध एवं प्रगतिशील चेतना के स्वर: समकालीन हिंदी गजल के सन्दर्भ में"** पर शोध करना चाहती हूँ।

अतः मुझे अपने निर्देशन में शोध कार्य करने की **सहमति प्रदान** की जाए इस कार्य हेतु मैंआपका सदा आभारी रहूँगी।

सधन्यवाद।

भवदीय

शोधार्थी

मीना साहू
शोधार्थी
हिंदी विभाग
राँची विश्वविद्यालय, रांची.

सहमति-पत्र

“विनय मिश्र की ग़जलों में परम्परा-बोध एवं प्रगतिशील चेतना के स्वर: समकालीन हिंदी गजल के सन्दर्भ में” प्रस्तावित शोध विषय पर पीएच0 डी0 शोध उपाधि हेतु **मीना साहू** को शोध निर्देशन देने की सहमति प्रदान करती हूँ।

शोध निर्देशिका

डॉ मीरा कुमारी,
सहायक प्राध्यापक,
हिंदी विभाग,
के0 सी0 बी0 महाविद्यालय, बेड़ो।

“विनय मिश्र कीग़ज़लोंमें परम्परा-बोध एवं प्रगतिशील चेतना के स्वर: समकालीन हिंदी गजल के सन्दर्भ में”

<u>शोध प्रस्तावना</u>

हिंदी साहित्य में ग़ज़ल एक महत्वपूर्ण विधा है , जिसमें कवि अपने विचारों , भावनाओं और अनुभवों को व्यक्त करते हैं। समकालीन हिंदी ग़ज़ल में इतिहास बोध और प्रतिरोधी चेतना एक महत्वपूर्ण विषय है, जो वर्तमान समय में सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक परिवर्तनों के संदर्भ में विशेष प्रासंगिक है। समकालीन हिंदी गजल का विकास पारंपरिक रूपों से बाहर निकलकर समाज, राजनीति, और संस्कृति के विभिन्न पहलुओं पर विचार करने की ओर बढ़ा है। इस बदलाव में दो महत्वपूर्ण आयाम हैं-**परम्परा-बोध** और **प्रगतिशील चेतना**। इन दोनों ने समकालीन ग़ज़ल को एक नया आयाम दिया है और इसे केवल व्यक्तिगत दुखों और प्रेम तक सीमित रहने से बाहर निकाल कर समाज और राजनीति के व्यापक मुद्दों पर आधारित बना दिया है।

<u>परम्परा-बोध</u>: समकालीन हिंदी गजल में परम्परा बोध का मतलब है, अपने अतीत, संस्कृति, और समाज के इतिहास एवं परम्परा को समझना और उसे वर्तमान के संदर्भ में देखना। गजलकार अब केवल व्यक्तिगत अनुभवों से नहीं , बल्कि समाज और देश की ऐतिहासिक घटनाओं , संघर्षों, और अन्याय से प्रभावित होकर अपनी गजलें लिखते हैं। परम्परा बोध के द्वारा गजलकार यह संकेत करते हैं कि वर्तमान समाज और राजनीतिक परिप्रेक्ष्य को समझने के लिए हमें अपने अतीत को जानना और समझना बेहद जरूरी है। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम , सामाजिक आंदोलनों, धार्मिक और सांस्कृतिक संघर्षों, और सामाजिक असमानताओं का गहरी छाप समकालीन गजल में देखने को मिलती है। गजलकार न केवल इन घटनाओं को याद करते हैं, बल्कि उन्हें वर्तमान की संदर्भ में आलोचना और विश्लेषण भी करते हैं-

"कैसे कहूँ की दर्द में डूबा नहीं कभी
बस ये हुआ कि हौसला टुटा नही कभी "

यह शेर समाज के अतीत के असमानताओं और उनके प्रभाव को दर्शाता है। इसमें यह भी संकेत मिलता है कि अतीत के सवालों का समाधान वर्तमान में नहीं हो पा रहा है।

<u>प्रगतिशील चेतना</u> : समकालीन हिंदी गजल में प्र गतिशील चेतना का उदय न केवल सामाजिक और राजनीतिक बुराइयों के प्रति गजलकारों का विरोध है , बल्कि यह उनके अंदर की गहरी संवेदनशीलता

और आलोचनात्मक दृष्टिकोण का परिणाम है। प्रगतिशीलता की यह चेतना गजलकारों को अपने समाज, संस्कृति, और सत्ता के खिलाफ बोलने के लिए प्रेरित करती है। वे उन ताकतों और विचारधाराओं का विरोध करते हैं, जो अन्याय, असमानता, और शोषण को बढ़ावा देती हैं।

गजलकार अब न केवल व्यक्तिगत ग़म और प्रेम की बातें करते हैं , बल्कि वे समाज में व्याप्त कुरीतियों, उत्पीड़न, भ्रष्टाचार, असमानता, और अन्याय के खिलाफ भी आवाज उठाते हैं। यह प्रगतिशीलता अक्सर सत्ता और व्यवस्था की आलोचना के रूप में सामने आती है, जहां गजलकार अपनी गजलों के माध्यम से अपने विरोध और असंतोष को प्रकट करते हैं-

"भूख की बेचैनियोंको गुनगुनाता हूँ
मैं तुम्हें सच का सही चेहरा दिखता हूँ।"

यह शेर सत्ता और समाज के शोषण पर प्रगतिशील चेतना की भावना को व्यक्त करता है, और यह दर्शाता है कि जब तक समाज में सच्चाई नहीं आएगी, तब तक शोषण और अन्याय जारी रहेगा।

परम्परा-बोध और प्रगतिशील चेतना का प्रभाव:

समकालीन हिंदी गजल मेंपरम्परा बोध और प्रगतिशील चेतना का मिला-जुला प्रभाव है। गजलकारों ने अपने अतीत की कड़वी सच्चाइयों, संघर्षों और असमानताओं को ध्यान में रखते हुए अपने साहित्यिक योगदान को समाज के वर्तमान संघर्षों के साथ जोड़ दिया है। यह ग़ज़लें न केवल व्यक्तिगत प्रेम और दुखों की बात करती हैं , बल्कि वे सामूहिक चेतना , सामाजिक बदलाव, और न्याय की मांग भी करती हैं।

परम्परा और प्र गतिशीलता की यह चेतना गजलकारों को न केवल अपने समय के सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों पर विचार करने की प्रेरणा देती है , बल्कि उन्हें संघर्ष और विरोध की भावना को कलात्मक रूप में व्यक्त करने का माध्यम भी प्रदान करती है। समकालीन गजल अब एक साधारण प्रेम गीत नहीं रही , बल्कि यह एक सामाजिक , राजनीतिक, और सांस्कृतिक आंदोलन का हिस्सा बन चुकी है , जो न केवल ग़ज़लकार की आवाज़ है , बल्कि पूरी सामाजिक चेतना का प्रतिबिंब भी है। प्रस्तावित शोध **"समकालीन हिंदी गजल में परम्परा बोध और प्रगतिशील चेतना:विशेष सन्दर्भ विनय मिश्र "** के माध्यम से न केवल व्यक्तिगत अनुभवों और भावनाओं को प्रकट कर ने का एक प्रयास होगा बल्कि समाज, राजनीति, और इतिहास के प्रति गहरी समझ और आलोचनात्मक दृष्टिकोण को भी प्रस्तुत करने में मदद मिलेगी। गजलकार अब अपने काव्य के माध्यम से न केवल प्रेम और विरह , बल्कि सामाजिक अन्याय , शोषण, और असमानताओं के खिलाफ प्रतिवाद भी

दर्ज करते हैं। इस प्रकार , समकालीन गजल के साहित्यिक परिप्रेक्ष्य में एक महत्वपूर्ण कार्य और मौलिक सिद्ध होगा।

इस शोध के माध्यम से हम समकालीन हिंदी ग़ज़ल प्रतिनिधि कवि विनय मिश्र कीगजलों में परम्परा बोध और प्रगतिशील जीवन मूल्यों महत्त्व को रेखांकितकरेंगें।

1. समकालीन संदर्भ:विनय मिश्र गजलों में परम्परा-बोध और प्रगतिशील चेतना का विश्लेषण करने से हमें वर्तमान समय की सामाजिक , राजनीतिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों को बेहतर ढंग से समझने में मदद मिलेगी।

2. साहित्यिक महत्व: गजल एक महत्वपूर्ण साहित्यिक विधा है , जिसमें इतिहास, संस्कृति, और समाज के विभिन्न पहलुओं को व्यक्त किया जाता है। इस विषय पर शोध करने से हमें हिंदी कविता की समृद्धि और विविधता को समझने में मदद मिलेगी ।

3. प्रगतिशील चेतना का महत्व : प्रगतिशील चेतना एक महत्वपूर्ण अवधारणा है , जो सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तन के लिए आवश्यक है। इस विषय पर शोध करने से हमें यह समझने में मदद मिलेगी कि कैसे विनय मिश्र की प्रगतिशील दृष्टि समकालीन हिंदी कविता को समृद्ध करती है।

4. परम्परा-बोध का महत्व : परम्परा-बोध एक महत्वपूर्ण अवधारणा है , जो हमें अपने अतीत को समझने और वर्तमान को बेहतर ढंग से समझने में मदद कर ता है। विनय मिश्र की गजलों में इस विषय पर शोध करने से हमें यह समझने में मदद मि लेगी कि कैसे उनका रचना कर्म परम्परा बोध को व्यक्त करने में हमारी मदद कर सकता है।

<u>शोध कार्य की प्रेरणा</u> :- आज गजल हिंदी कविता की सर्वाधिक जनप्रिय और विमर्श बोधि विधा है जिसमे अपने समय, समाज और जीवन मूल्यों की मुखर अभिव्यक्ति है विनय मिश्र समकालीन हिंदी गजल के एक प्रतिनिधि कवि हैं । उनकी गजलों में अपने समय का समग्र प्रभाव ब्यापक रूप से दिखाई पड़ता है। उनकी गजलों में परंपरा बोध का उदात्त मुल्यांकन है और उनकी प्रगतिशील जीवन दृष्टि अपने युग बोध का प्रतिनिधत्व करती है । ऐसे में समकालीन प्रगतिशील हिंदी कविता का रास्ता विनय मिश्र की गजलों से होकर जाता है। इसलिए उनकी गजल संसार का अन्वेषन विश्लेष्ण और मूल्यांकन इस शोध कार्य को एक प्रमाणिक औरे प्रेरक भावभूमि प्रदान करता है ।शोध कार्य की प्रेरणा जिज्ञासावश निम्नलिखित कारणों से मिली है:-

1. वर्तमान में विनय मिश्र की कविताओं और गजलों पर अनेक विश्वविद्यालयों में लघु शोध प्रबंध कार्य चल रहे हैं उनकी गजलों पर अनेक विश्वविद्यालयों में शोध कार्य संपन्न हो चुके हैं।हिंदी गजल के क्षेत्र में उनके इस महत्वपूर्ण योगदान को देखते मैंने उन पर द्शोध कार्य करने का मन बनाया है।

2. विनय मिश्र की गजलों राग बोध की मिठास है । परम्परा का गहन चिन्तन है और प्रगतिशील जीवन मूल्यों का निर्वाह है।
3. विनय मिश्र की गजलें अपने समकालीन गजलकारों से बिलकुल अलग है उनमें एक साथ हिंदी कविता भारतीय कविता और वैशिव्क कविता का आस्वादन मिलता है।समकालीन हिंदी गजल को उन्होंने अपनी संवेदन दृष्टि और काव्य कौशल से एक नया आयाम दिया है।
4. उनकी गजलों की भाषा जन भाषा है जो ण तो कठिन उर्दू फारसी के शब्दों से प्रभावित है संस्कृत कठिन शब्दों से विनय मिश्र इसलिए भी महत्वपूर्ण कवि हैं क्योकि वे अपने समय में रचनात्मक हस्तक्षेप करते है उनकी गजलों में एक बेहतर दुनियां का स्वप्न है साथ ही अपने समय की ब्याप्त विसंगतियो भ्रष्टचार अन्याय पर तीखा प्रहार है।

<u>अनुसंधान की संभावनाएं</u>

- विनय मिश्र की गजलों एवं रचना संसार पर अभी सीमित शोध कार्य हुआ है , जबकि उन पर अनेक आयामों में शोध कार्य करने की आवश्यकता है।
- मेरा यह शोध कार्य न केवल हिंदी साहित्य को समृद्ध करेगा बल्कि समकालीन हिंदी गजल के मूल्यांकन का भी प्रयास करेगा।

<u>शोध कार्य की उपादेयता</u>

शोध कार्य का साहित्य , समाज और शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान होता है। समकालीन हिंदी गजल में शोध कार्य की उपादेयता को निम्नलिखित बिंदुओं में समझा जा सकता है:

1. साहित्यिक योगदान

- **गजल के विकास को समझने में मदद:**
  शोध कार्य गजल की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि से लेकर समकालीन परिवर्तनों तक की गहन समझ प्रदान करता है। यह गजल के साहित्यिक विकास को एक व्यवस्थित ढंग से दस्तावेजीकरण करता है।

- **रचनाकारों के योगदान का मूल्यांकन:**
  यह शोध कार्य विनय मिश्र की गजलों का विश्लेषण कर उनके साहित्यिक योगदान को पहचानने और रेखांकित करने में सहायक होगा।
- **साहित्यिक विधा को समृद्ध करना:**
  इस शोध के माध्यम से समकालीन गजल में निहित जीवन बोध और वैश्विक संवेदनो को समझने का प्रयास होगा जो हिन्दी कविता के साथ इस विधा को समृद्ध होगा।

2. सामाजिक और सांस्कृतिक उपयोगिता

- **समाज की वास्तविकताओं का चित्रण:**
  विनय मिश्र की गजलें समाज की विसंगतियों, राजनीतिक भ्रष्टाचार, और नैतिक पतन को उजागर करती है। यह शोध कार्य इन सामाजिक मुद्दों को गजल के दृष्टिकोण से समझने का अवसर प्रदान करेगा।
- **सांस्कृतिक मूल्यों का संरक्षण:**
  यह शोध कार्य विनय मिश्र गजलों में निहित सांस्कृतिक, प्रगतिशील और पारंपरिक मूल्यों को संरक्षित करने और उन्हें आधुनिक संदर्भ में प्रासंगिक बनाने का कार्य करेगा।

3. शैक्षणिक महत्व

- **शोध सामग्री के रूप में उपयोग:**
  यह शोध कार्य भविष्य मेंविनय मिश्र की गजलों पर शोध कार्य करने वाले शोधार्थियों और विद्यार्थियों के लिए एक संदर्भ सामग्री के रूप में कार्य करेगा।
- **साहित्य में नई दृष्टि का विकास:**
  यह गजल के अध्ययन के लिए नई दृष्टि और नए रास्ते को विकसित करने में सहायक होगा।
- **शैक्षिक पाठ्यक्रमों में उपयोगिता:**
  समकालीन गजल पर आधारित शोध से इसे विश्वविद्यालयों और विद्यालयों के पाठ्यक्रम में शामिल करने के लिए उपयोगी सामग्री उपलब्ध होगी।

5. आधुनिक पीढ़ी के लिए प्रेरणा

- **पाठकों और लेखकों के बीच सेतु:: आज** की गजलें जन संवादी है विनय मिश्र की गजलें उन्हें गजल लेखन और पठन-पाठन की ओर आकर्षित होगी।

- **युवाओं को जोड़ने की क्षमता:**
  विनय मिश्र की गजलों में युवाओं को प्रेरित करने की क्षमता है जो उन्हें साहित्य और समाज के प्रति अधिक संवेदनशील बनाती हैं।

6. साहित्य और समाज के बीच संवाद

विनय मिश्र की गजलों पर केन्द्रित यह शोध कार्य साहित्य और समाज को जोड़ने, उसे समृद्ध करने और भविष्य की पीढ़ियों को दिशा देने में अत्यंत उपयोगी है। यह न केवल साहित्य के विकास को समझने में सहायक है, बल्कि इसे नई ऊंचाइयों तक पहुंचाने में भी योगदान देता है।

शोध कार्य का महत्व

विनय मिश्र की गजलेंअपने साहित्य, समाज, संस्कृति, और ज्ञान के विभिन्न आयामों में व्यापक फलक लिए हुए हैऔर अपने समकाल से सीधा संवाद करती है । विनय मिश्र उम्मीद एवं उजास के कवि हैं इसलिए उनकी ग़ज़लों में आस्था का उद्गोश है यह न केवल ज्ञान के प्रसार और संवर्धन का माध्यम है, बल्कि इसके माध्यम से नई सोच, दृष्टिकोण, और समाधान प्राप्त किए जा सकते हैं।

शोध कार्य का महत्व केवल ज्ञान के विस्तार तक सीमित नहीं है , बल्कि यह साहित्य , समाज, संस्कृति, और भाषा के विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। समकालीन हिंदी गजल पर शोध कार्य साहित्य की इस विधा को नई पहचान और प्रासंगिकता प्रदान करता है , जो आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणास्रोत बनेगा।

विनय मिश्र समकालीन हिंदी गजलकारों में एक प्रमुख नाम हैं। उनका रचनाकाल मुख्य रूप से **1990 के बाद**का है। वे हिंदी गजल के क्षेत्र में अपनी सशक्त और संवेदनशील अभिव्यक्ति के लिए जाने जाते हैं। उनकी गजलें प्रेम, मानवीय संबंधों, और सामाजिक यथार्थ को सुंदर ढंग से अभिव्यक्त करती हैं।उनकी रचनाओं में आधुनिक गजल की सरलता और गहराई का अनूठा मेल देखने को मिलता है। विनय मिश्र ने गजल को परंपरागत शैली से अलग करते हुए समकालीन भावनाओं और विचारों को प्रस्तुत किया है, जिससे वे वर्तमान समय के प्रमुख गजलकारों में गिने जाते हैं।

शोध के उद्देश्य

1. विनय मिश्र की गजलों में परम्परा-बोध का विश्लेषण करना: शोध का उद्देश्य समकालीन हिंदी गजल में परंपरा-बोध के विभिन्न पहलुओं का विश्लेषण करना होगा।

2. प्रगतिशील चेतना का विश्लेषण करना: शोध का उद्देश्य विनयं मिश्र की गजलों में प्रगतिशील चेतना के विभिन्न पहलुओं का विश्लेषण करना होगा।

3. परम्परा-बोध और प्रगति शील चेतना के बीच संबंध का विश्लेषण करना: शोध का उद्देश्य समकालीन हिंदी गजल में परम्परा-बोध और प्रगतिशील चेतना के बीच संबंध का विश्लेषण करना होगा।

<u>शोध की विधि</u>

1. साहित्यिक विश्लेषण: शोध में साहित्यिक विश्लेषण की विधि का उपयोग किया जाएगा।

विनय मिश्र की ग़ज़लों में परम्परा-बोध एवं प्रगतिशील चेतना के स्वर: समकालीन हिंदी गजल के सन्दर्भ में

इस शोध प्रस्ताव के लिए अध्याय विभाजन इस प्रकार है:

प्रथम अध्याय: विनय मिश्र का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

क) विनय मिश्र के व्यक्तित्व: जन्म, शिक्षा-दीक्षा एवं पारिवारिक पृष्ठभूमि
ख) कृतित्व: गीत-संग्रह, दोहा-संग्रह, ग़ज़ल-संग्रह, सम्पादन एवं अन्य
ग) सम्मान एवं पुरस्कार

द्वितीय अध्याय: समकालीन हिंदी ग़ज़ल की पृष्ठभूमि और विकास यात्रा

क) समकालीनता का सामान्य परिचय
ख) ग़ज़ल की उत्पति
ग) ग़ज़ल की परंपरागत सरंचना
घ) हिंदी ग़ज़ल की प्रारम्भिक यात्रा (प्राचीन एवं मध्ययुग)
ङ) समकालीन हिंदी ग़ज़ल और प्रमुख ग़ज़लकार

तृतीय अध्याय: विनय मिश्र की ग़ज़लों में परंपरा बोध

क) परम्परा-बोध: अर्थ एवं स्वरुप

ख) परम्परा-बोध का महत्त्व

ग) समकालीन हिंदी गजलों में परम्परा बोध

घ) विनय मिश्र की गज़लों में परम्परा बोध

चतुर्थ अध्याय: विनय मिश्र की गजलों में प्रगतिशील चेतना के स्वर

क) प्रगतिशील चेतना: अर्थ एवं स्वरूप

ख) प्रगतिशील चेतना का महत्त्व

ग) समकालीन हिंदी गजलों में प्रगतिशील चेतना

घ) विनय मिश्र की गजलों में प्रगतिशील चेतना के स्वर

पंचम अध्याय: विनय मिश्र की गजलों में विविध सन्दर्भ

क) साहित्यिक सन्दर्भ

ख) सामाजिक संदर्भ

ग) राजनैतिक सदर्भ

घ) सांस्कृतिक सन्दर्भ

उपसंहार :

इस अध्याय में शोध प्राविधि,शोध की उपादेयता, उपलब्धि आदि का उल्लेख किया जाएगा।

संदर्भ और ग्रंथ सूची:

आधार ग्रन्थ सूची :-

क्र0 सं0	पुस्तक	लेखक	प्रकाशक	प्रकाशन
1	सच और है	विनय मिश्र	लिटिल बर्ड पब्लिकेशन, दिल्ली	2012
2	समय की आँख नम है	विनय मिश्र	बोधि प्रकाशन, जयपुर	2014
3	सूरज तो अपने हिसाब से निकलेगा	विनय मिश्र	मेघा प्रकाशन, दिल्ली	2015
4	लोग जिन्दा हैं	विनय मिश्र	लिटिल बर्ड पब्लिकेशन, दिल्ली	2016

5	इस पानी में आग	विनय मिश्र	बोधि प्रकाशन, जयपुर	2020
6	तेरा होना तलाशूं	विनय मिश्र	शिल्पायन बुक्स, दिल्ली	2021
7	जिंदगी आने को है	विनय मिश्र	लिटिल बर्ड पब्लिकेशन, दिल्ली	2023
8	बनारस की हिंदी ग़ज़ल	विनय मिश्र	बोधि प्रकाशन, जयपुर	2018
9	रंग बारिश	विनय मिश्र	लिटिल बर्ड पब्लिकेशन	2025
10	समकालीन ग़ज़ल और विनय मिश्र	डॉ लवलेश दत्त	लिटिल बर्ड पब्लिकेशन, दिल्ली	2020
11	विनय मिश्र का रचना कर्म:दृष्टि और मूल्यांकन	श्रीधर मिश्र	लिटिल बर्ड पब्लिकेशन, दिल्ली	2023

<u>सहायक ग्रन्थ सूची:-</u>

1	साये में धूप	दुष्यंत कुमार	राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली	2018
2	समकालीनता हिंदी गजल	रामनारायण स्वामी अंक	नवचेतन प्रकाशन दिल्ली	2005
3	साठोत्तरी हिंदी गजल	डॉ मधु खराटे	विद्‌या प्रकाशन कानपूर	2011
4	गज़ल और उसका व्याकरण	डॉ गिरिजशरण अग्रवाल	हिंदी साहित्य निकेतन बिजनौर	1999
5	हिंदी गज़ल और गजलकार	डॉ मधु खराटे	विद्‌या प्रकाशन कानपूर	2012
6	हिंदी गज़ल का चिन्तन पक्ष	डॉ जगदीश चौहान	विद्‌या प्रकाशन कानपूर	2019
7	हिंदी गज़ल के नवरत्न	डॉ मधु खराटे	विद्‌या प्रकाशन कानपूर	2014
8	गज़ल लेखन परंपरा और हिंदी गज़ल का विकास	डॉ जियाउल रहमान	अनुकृति प्रकाशन दिल्ली	2019
9	आधुनिक हिंदी गज़ल: प्रयोग एवं परंपरा	डॉ विजय लक्ष्मी पांडे	विकास प्रकाशन कानपुर	2020
10	हिंदी गज़ल की संरचना : एक परिचय	आर0 पी0 शर्मा महर्षि	विकल्प प्रकाशन कोटा	1996

11	हिंदी ग़ज़ल की भूमिका	डॉ शिव शंकर मिश्र	लक्ष्मी प्रकाशन दिल्ली	2007
12	हिंदी साहित्य का इतिहास	आचर्य रामचंद्र शुक्ल	मालिक एंड कम्पनी जयपुर	2018
13	जाहिर कुरैशी: महत्त्व और मूल्यांकन	विनय मिश्र	उर्वशियम	2010
14	हिंदी ग़ज़ल की नई चेतना	विवेक ज्ञान प्रकाश	प्रकाशन संसथान दिल्ली	2018
15	हिंदी गजल की विकास यात्रा	विवेक ज्ञान प्रकाश	प्रकाशन संसथान दिल्ली	२००६

पत्र-पत्रिकाएँ

1. "दीप ज्योति" पत्रिका के तुलसी विशेषांक का सन् 2001
2. "दीप ज्योति" पत्रिका के तुलसी विशेषांक का सन् 2001
3. "शब्द कारखाना" पत्रिका के समकालीन हिंदी ग़ज़ल पर केंद्रित विशेषांक का सन् 2007
4. "पलाश वन दहकते हैं" स्वर्गीय मंजु अरुण की रचनावली का सन् 2009
5. "अलाव " पत्रिका के समकालीन हिंदी ग़ज़ल की आलोचना पर केंद्रित विशेषांक का सन् 2015
6. "संवदिया " समकालीन ग़ज़ल के युवा लेखन केंद्रित विशेषांक का सन् अगस्त 2021 में संपादन